ॐ

वेदमन्त्रोंमें आनेवाले युद्धके नाम

(लेखक— पं. श्री. दा. सातवलेकर)

युद्ध अनेक प्रकारके होते हैं, इस कारण उसके नाम भी अनेक होते हैं । निघण्टुमें ४६ युद्धके नाम दिये हैं । इनका विचार करनेसे कितने प्रकारके युद्ध हो सकते हैं, इसका ज्ञान हो सकता है । ४६ युद्धके नाम हैं, इसीसे ज्ञात हो सकता है कि, युद्धके विषयमें कितना सूक्ष्म विचार हुआ होगा । यदि विचार न होता, तो इतने नाम नहीं आते । पर यहां ये नाम प्रयुक्त हुए हैं, निघण्टुकारने ये युद्धके नाम हैं, ऐसा माना है । अर्थात् इतने युद्धके नाम माने गये और प्रयुक्त हुए हैं, इसमें संदेह नहीं है । इन नामोंमें प्रथम विचार करने योग्य ' मम-सत्यं ' यह युद्ध नाम है—

१ मम--सत्यम्

' मेरा कथन ही सत्य है ' यह इसका अर्थ है । ' मेरा कथन ही सत्य है, दूसरेका कथन सत्य नहीं है, ऐसा आग्रह जहां होगा, वहां युद्ध संभव हो सकता है । ' मेरा ही कथन सत्य है, दूसरेका कथन सत्य नहीं है ' ऐसा आग्रह हुआ तो उन दोनों व्यक्तियोंका, अथवा दोनों पक्षोंका, किंवा दोनों राष्ट्रका संघर्ष होना स्वाभाविक है । संघर्ष ही युद्ध है । इसलिये ' मम-सत्यं ' यह युद्धका नाम वेदमें प्रयुक्त है । इसके प्रयोगका मंत्र यह है—

त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र
संतस्थाना विह्वयन्ते समीके ।
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान्
नासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः ॥

ऋ. १०।४२।४; अथर्व. २०।८९।४

' हे इन्द्र ! (ममसत्येषु) मेरा पक्ष सत्य है ऐसा मानकर (समीके संतस्थानाः) युद्धमें उपस्थित होनेवाले (जनाः) लोग (त्वां विह्वयन्ते) तुझे सहायार्थ बुलाते हैं । (यः अत्र हविष्मान्) जो यहां हवनसामग्री लेकर यज्ञ करता है उसके साथ इन्द्र (युजं कृणुते) मित्रता करता है, (शूरः) शूर इन्द्र (असुन्वता सख्यं न वष्टि) सोमयाग न करनेवालेके साथ मित्रता नहीं चाहता ।

चार वेदोंमें यह एक ही मंत्र है कि जिसमें ' मम--सत्यं ' इस युद्धवाचक पदका प्रयोग हुआ है । मेरे पक्षका यह कहना ही सत्य है, दूसरेका कहना असत्य है, ऐसा आग्रह बढ गया, तो युद्ध उन दो पक्षोंमें होता है । यह त्रिकालाबाधित सत्य है । इस ' मम-सत्यं ' इस पदने यह वास्तविक सत्य दर्शाया है । अपने पक्षके मतके विषयमें दुराग्रह नहीं हुआ, और दूसरे पक्षके मतमें भी जो सत्यता होगी उसको विचारमें लेनेकी सहिष्णुता जहां होगी, वहां युद्ध नहीं होंगे, यह भाव यहां है । अतः अपने मतका दुराग्रह नहीं धारण करना चाहिये, इस ' मम-सत्यं ' पदकी सूचना है ।

२ समीके

' समीक ' पद वेदमें युद्धवाचक करके आता है । इसका यौगिक अर्थ ' (सं) मिलकर (ईं) अधिकार प्राप्तिके लिये (क) प्रयत्न करना अथवा ' (सं) मिलकर (ई) शत्रुत्व (क) करना । ये दोनों अर्थ युद्धका संभव निर्माण करते हैं । ' ईरीश्वरो भवेच्छत्रुः (एकाक्षरी) ' ई ' का अर्थ ' ईश्वर ' अथवा ' शत्रु ' है । यहां दोनों अर्थ लेकर अर्थ किया है । अधिकार अर्थात् ईश्वरत्व प्राप्त करनेके लिये दो पक्षोंमें झगडा हो सकता है, अथवा आपसमें मिलकर किसीके साथ शत्रुत्व करनेसे भी झगडा होनेकी संभावना हो सकती है । इस कारण यह ' समीक ' पद युद्धवाचक होता है इसका प्रयोग वेद मंत्रोंमें होता है देखिये—

सम्मिन्नरो विह्वयन्ते समीके
रिरिक्वांसः तन्वः कृण्वत त्राम् ।
मिथो यत् त्यागं उभयासो अग्मन्
नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ ॥ ऋ. ४।२४।३

(समीके) युद्धमें (नरः) नेता लोग (तं इत् विह्वयन्ते) उस इन्द्रको ही अपने सहाय्यार्थ बुलाते हैं, जिससे (तन्वः रिरिक्वांसः) शरीरोंका नाश करनेवाले युद्धमें (त्रां कृण्वते) अपना संरक्षण कर सकते हैं, (यत्) जब (उभयासः मिथ त्यागं) दोनों पक्षके लोग अपने सर्वस्वका त्याग करनेको तैयार होते हैं, तब (नरः) लोग (तोकस्य तनयस्य सातौ) बालबच्चोंके संरक्षणके लिये उसीका आश्रय करते हैं '।

यहां ' समीके नरः तं विह्वयन्ते ' युद्धमें नेता लोग इन्द्रको ही अपने सहायार्थ बुलाते हैं ऐसा कहा है तथा और देखिये—

सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम
नमोवृधासो महिना तरुत्र।
वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीके
अभीतिमर्यो वनुषां शवांसि॥ ऋ. ७।२१।९

' हे इन्द्र ! (ते नमोवृधासः सखायः विश्वह स्याम्) तुझे नमस्कार करनेवाले हम तेरे मित्र होकर सदा रहेंगे। हे (महिना तरु-त्र) अपनी शक्तिसे सत्वर तारण करनेवाले इन्द्र ! (ते अवसा) तेरे संरक्षणसे (समीके) युद्धमें (अर्यः अभीतिं) शत्रुके आक्रमणका तथा (वनुषां शवांसि) हिंसकोंके बलोंका हम प्रतीकार करेंगे। ' इस मंत्रमें ' समीके ' पद युद्धवाचक है। तथा और देखिये—

इन्द्रं इद् देवतातये इन्द्रं प्रयत्यध्वरे।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामहे
इन्द्रं धनस्य सातये॥

ऋ. ८।३।५; अथर्व २०।११८।३

' (देवतातये इन्द्रं) यज्ञके लिये हम इन्द्रको बुलाते हैं, (अध्वरे प्रयति इन्द्रं) अहिंसापूर्ण यज्ञ चालू होने पर हम इन्द्रको बुलाते हैं। (समीके वनिनः इन्द्रं हवामहे) युद्धमें विजय प्राप्त करनेकी इच्छा करनेवाले हम इन्द्रको बुलाते हैं तथा (धनस्य सातये इन्द्रं) धनका दान मिले ऐसी इच्छा हुई तो भी हम इन्द्रको ही बुलाते हैं।

यहां युद्धमें विजय प्राप्त करना हो तो हम इन्द्रको बुलाते हैं, ऐसा जो कहा है वहां युद्धवाचक ' समीके ' पद आया है। यह पद इतनी बार ही वेदमें आया है और इसका अर्थ सर्वत्र ' युद्ध ' ही है।

३ विवाक्

' विवाक् ' पद युद्धवाचक वेदमें आता है। ' वि-वाक् ' विरुद्ध भाषण, वितण्डावाद करनेवाला जो होता है वह शत्रु ही होता है, उसके साथ युद्ध होता है। विरोधी भाषण करनेके कारण कितने झगडे इस भूमंडल पर होते हैं, यह देखनेसे इस ' वि-वाक् ' का ठीक युद्ध विषयक भाव ध्यानमें आ जायगा। इसके उदाहरण अब देखिये—

विभेद वलं नुनुदे विवाचो
अथा भवद् दमिताभिक्रतुनाम्॥ ऋ. ३।३४।१०

' इन्द्रने (वलं विभेद) वल नामक शत्रुको छिन्न भिन्न किया, (विवाचः नुनुदे) शत्रुओंको हटा दिया, (अभिक्रतुनां दमिता अभवत्) प्रबल शत्रुओंको वह दबानेवाला हुआ। ' तथा और देखिये—

यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः
पुरु सहस्राशिवा जघान।
तत् तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि
पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः॥

ऋ. १०।२३।५; अथर्व २०।७३।६

(यः) जिस इन्द्रने (विवाचः मृध्रवाचः) विरुद्ध बोलनेवाले और युद्धकी भाषा बोलनेवाले (अ-शिवाः पुरु-सहस्रा वाचा जघान) ऐसे हजारोंसे भी अधिक अशुभ शत्रुओंको अपनी वाणीसे ही मार दिया, (तत् इद अस्य पौंस्यं गृणीमसि) वह इसका सामर्थ्य स्तुति करने योग्य है। (यः पिता इव) जो पिताके समान (तविषी शवः वावृधे) अपनी शक्ति और सामर्थ्य बढाता है।

' विवाक् ' पद निघण्टुमें युद्ध नामोंमें आया है। यह पद विरुद्ध भाषण करनेसे जो युद्ध होते हैं उनका वाचक है।

४ महाधन

' महाधन ' यह पद युद्धवाचक नामोंमें वेदमें आता है। ' महाधन ' का अर्थ ' बडा धन ' है। युद्धमें विजय प्राप्त होनेपर शत्रुके नगर लूटकर बहुत धन प्राप्त होता है। इस कारण युद्धमें विजय प्राप्त करना, यह बहुत धन प्राप्त करनेका एक बडा साधन समझा जाता है। युद्धमें विजेता वीरको विजय प्राप्त करनेके पश्चात् शत्रुको लूटनेका अधिकार रहता है, ऐसा इस ' महाधन '

पदसे प्रतीत होता है। वेद भी विजयी वीरको शत्रुको लूटनेका अधिकार देता है, ऐसा इस पदसे प्रतीत होता है। देखिये इस महाधनके मंत्रके उपयोग—

इन्द्रं वयं महाधने इन्द्रं अर्भे हवामहे।
युजं वृत्रेषु वज्रिणम्॥

ऋ. १।७।५; अथर्व २०।७०।११

(वयं इन्द्रं महाधने हवामहे) हम इन्द्रको बडे युद्धमें सहायार्थ बुलाते हैं और (इन्द्रं अर्भे) हम इन्द्रको छोटी लडाईमें भी बुलाते हैं, (वृत्रेषु वज्रिणं युजं) तथा शत्रुओं पर हम मित्र वज्रधारी इन्द्रको भेजते हैं। तथा—

उप क्षत्रं पृञ्चीत हन्ति राजभिः
भये चित् सुक्षितं दधे।
नास्य वर्ता न तरुता महाधने
नार्भे अस्ति वज्रिणः॥ ऋ. १।४०।८

'ब्रह्मणस्पति (क्षत्रं उप पृञ्चीत) अपने क्षात्र बलको इकट्ठा करता है, (राजभिः हन्ति) अपने क्षत्रियोंके साथ मिल कर शत्रुको मारता है। (भयं चित् सुक्षितिं दधे) भय उपस्थित होनेपर अपने स्थानपर वह स्थिर रहता है। (महाधने) बडे युद्धमें (अस्य वर्ता न) इसका निवारण कोई नहीं कर सकता, (न तरुता) न इसका पराभव करने वाला भी कोई है, (वज्रिणः न अर्भे आसि) इस वज्रधारी इन्द्रका छोटे युद्धमें भी निवारण करनेवाला कोई नहीं है। तथा—

याभिः शर्यातं अवथो महाधने
ताभिः ऊषु ऊतिभिः अश्विना गतम्॥

ऋ. १।११२।१७

'(याभिः ऊतिभिः) जिन संरक्षणोंसे तुमने (महाधने शर्यातं अवथः) बडे युद्धमें शर्यातका संरक्षण किया (ताभिः) उन संरक्षणोंके साथ, हे अश्विदेवो! हमारे संरक्षणके लिये (आगतं) आवो।'

अस्माकं बोध्यविता महाधने॥ ऋ. ६।४६।४

'महायुद्धमें हमारा संरक्षण करनेवाला हो'।

यदिन्द्र सर्गे अर्वतः चोदयसे महाधने॥

ऋ. ६।४६।१३

'हे इन्द्र! तू अपने (अर्वतः) घोडोंको (महाधने चोदयसे) बडे युद्धमें चलाता है।'

इन्द्राग्नि आहितन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः।
मा नो अस्मिन् महाधने परा वक्तं गविष्टिषु॥

ऋ. ६।५९।७

हे इन्द्र और अग्नि! वीर लोग अपने बाहुओंसे धनुष्य तान रहे हैं। इसलिये (अस्मिन् महाधने) इस महायुद्धमें (गविष्टिषु) गौवें प्राप्त होनेके समयमें (नः मा परावक्तं) हमें दूर न छोडो अर्थात् हमारे सहायक होकर रहो। तथा—

मा नो अस्मिन् महाधने परावर्ग् भारभृद्यथा।
संवर्गं संरयिं जय॥ ऋ. ८।७५।१२

'(अस्मिन् महाधने) इस महायुद्धमें (नः मा परावर्क्) हमें दूर न करो (यथा भारभृत्) जैसा बोझा उठानेवाला अधिक भार होनेपर भारको फेंकता है, वैसा हमें न दूर फेंक। (संवर्गं रयिं संजय) तू शत्रुकी संपूर्ण संपत्ति जीत कर प्राप्त कर,।

(संवर्गं रयिं संजय) शत्रुकी सब प्रकारकी संपत्ति विजय करके प्राप्त करो। विजय प्राप्त करनेसे शत्रुके सब वर्गोंकी संपत्ति विजयी वीरको प्राप्त होती है। युद्धमें जो वीर जाते हैं वे उत्तम कपडे, उत्तम जेवर पहनकर सजकर आते हैं। युद्धमें यदि वे मरे तो मरे हुए सब वीरोंके शरीर परके उत्तम कपडे और जेवर विजयी वीर लेता है इस कारण 'महाधन' पद महासंग्रामका वाचक वेदमें माना गया है। क्योंकि संग्राममें विजय प्राप्त करनेसे शत्रुका संपूर्ण धन विजयी वीरको मिलता है। युद्धके नामोंमें 'महाधन' पद है, इसका भाव यह है।

५ धन

इसी तरह धन पद भी वेदमें युद्ध वाचक है। युद्धमें विजय कमानेका अर्थ धन कमाना ही अर्थ है देखिये—

त्वां विद्धि सहसस्पुत्र मर्त्य उप ब्रूते धने हिते।

ऋ. १।४०।२

हे (सहसः पुत्र) बलका रक्षण करनेवाले वीर! (धने हिते) युद्ध छिड जानेपर (त्वां इत्) तुझे ही (मर्त्यः उप ब्रूते) मनुष्य अपने सहाय्य करनेके लिये बुलाते हैं। तथा—

सद्यो जंघां आयसीं विश्पलायै
धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम्॥ ऋ. १।११६।१५

'तुमने विश्पलाके (आयसी जंघां) लोहेकी टांग (सद्यः) तत्काल (धने हिते सर्तवे) युद्ध शुरू होनेपर चलने फिरनेके लिये (प्रत्यधत्तं) लगा दी।' युद्ध छिडने पर चलना और फिरना युद्धकी भूमिमें आवश्यक होता है। वह करनेके लिये लोहेकी टांग लगादी और टूटी हुई टांग काट कर फेंक दी। तथा—

धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः। ऋ. १।११२।५

(धने हिते) युद्ध छिड जानेपर (श्रवस्यवः तरुषन्त) कल्याण प्राप्त करनेकी इच्छा करनेवाले वीर (तरुषन्त) शत्रुपर हमला करते हैं।

अभूरु वीर गिर्वणो महां इन्द्र धने हिते।
भरे वितन्तसाय्यः॥ ऋ. ६।४५।१३

हे (गिर्वणः वीर इन्द्र) प्रशंसनीय वीर इन्द्र! (धने हिते भरे) युद्ध शुरू होनेपर (महान् वितन्तसाय्यः अभूः) शत्रुओंका बडा विनाश करनेवाला तूं हुआ है।

इस मंत्रमें 'धने हिते' तथा 'भरे' ये पद युद्ध वाचक आ गये हैं। 'भरे' का अर्थ 'धनसे भरपूर भर देना' है। यह कार्य युद्धमें विजय प्राप्त करनेसे होता है। तथा—

यस्त्वा देवि सरस्वति उपब्रूते धने हिते।
इन्द्रं न वृत्रतूर्ये॥ ऋ. ६।६१।५

हे सरस्वती देवि! (वृत्रतूर्ये इन्द्रं न) वृत्रके साथ होनेवाले युद्धमें जैसा सहाय्यार्थ इन्द्रको बुलाते है, उस तरह (धने हिते) युद्ध शुरू होनेपर (यः त्वा उपब्रूते) जो तुझे बुलाता है उसका तू रक्षण कर। तथा—

येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते।
येन प्रस्कण्वमाविथ॥ ऋ. ८।३।९; अथर्व. २०।९।३; २०।४९।६

(धने हिते) युद्ध शुरू होनेपर (येन) जिस सामर्थ्यसे तूने (यतिभ्यः) यतियोंसे धन लाकर (भृगवे) भृगुको दिया था और (येन) जिस सामर्थ्यसे (प्रस्कण्वं आविथ) प्रस्कण्वकी तूने रक्षा की, वह सामर्थ्य तू हमें दे।

इस मंत्रमें यतियोंका धन लाकर भृगुको देनेका उल्लेख है। 'यति' का अर्थ संन्यासी, उदासी, जो गृहस्थ धर्ममें न रहकर संसार छोडकर उदासी संप्रदायमें रहते थे। इन्द्र उनका धन लेकर गृहस्थ धर्मी भृगुको देता है। एतरेय ब्राह्मणमें भी 'यतीन् सातावृकेभ्यः प्राच्छयत्' ऐ. ब्रा. यतियोंके टुकडे करके जंगली हिंसक पशुओंको खानेके लिये दिये, ऐसा इन्द्रका वर्णन है। इसका तात्पर्य यही है कि वैदिक कर्ममें तीन ही आश्रम हैं, संन्यास यह चतुर्थ आश्रम नहीं है।

यं देवासोऽवथ वाजसातौ
यं शूरसाता मरुतो हिते धने।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिं
अरिष्यन्तमारुहेमा स्वस्तये॥ ऋ. १०।६३।१४

हे (देवासः) देवो! (वाजसातौ यं अवथ) अन्नकी प्राप्तिके लिये होनेवाले युद्धमें तुम जिसकी सुरक्षा करते हो (हिते धने) युद्ध छिडनेपर (शूरसाताः मरुतः) शूरता करनेवाले वीर मरुत (यं) जिसका रक्षण करते हैं उस (सानसिं) सुन्दर (अ-रिष्यन्तं) विनष्ट न होनेवाले (प्रातः यावाणं रथं) प्रातः काल जानेवाले रथपर (स्वस्तये आरुहेम) अपने कल्याणके लिये हम चढते हैं।

इस प्रकार 'धन, महाधन' इन पदोंका अर्थ वेदमें युद्ध है। 'धने हिते' का अर्थ युद्ध शुरू होनेपर ऐसा भी है और धनके उद्देश्यसे कर्म शुरू होनेपर ऐसा भी अर्थ होनेकी संभावना है। युद्धमें विजय हुआ तो शत्रुका राज्य भी अपने आधीन हो जाता हैं, शत्रुके धन, धान्य, अलंकार, गौवें, घोडे, घर आदिकी प्राप्ति हो जाती है। यह 'धने, महाधने' पदोंका भाव है।

६ भरे

'भरे' अथवा 'भर' पद निघण्टुमें युद्ध नामोंमें आया है। 'भरे' का अर्थ भरना, भर देना। शत्रुका पराजय करके उसका धन लाकर अपने घरमें भर देना यह भाव इस पदमें है।

भरेषु हव्यः। ऋ. १।१००।१; २।२३।१३

'युद्धोंमें सहायतार्थ बुलाने योग्य इन्द्र है।' तथा और देखिये—

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्॥ ऋ. १०।६३।९

(भरेषु) युद्धोंमें (सुहवं) बुलाने योग्य (अंहो मुचं) पाप दूर करनेवाले (सुकृतं) उत्तम कार्य करनेवाले (दैव्यं

जनं इन्द्रं) दिव्य जन इन्द्रको (हवामहे) हम सहाय्यार्थ बुलाते हैं ।

भरे भरे अनुमदेम जिष्णुम् । ऋ. १०।६७।९; अथर्व. २०।९१।९

हम प्रत्येक युद्धमें विजयी वीरको आनन्दित करते हैं । तथा—

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकं
अंशं उदवा भरे भरे ॥ ऋ. १।१०२।४; अथर्व. ७।५१।४

(त्वया युजा वयं जयेम) तेरे साथ रहकर हम विजय प्राप्त करें । (भरे भरे) प्रत्येक युद्धमें (अस्माकं अंशं उदव) हमारे भागको तूं ऊंचा करके सुरक्षित रख ।

भरे भरे वृत्रहा शुष्मो अस्ति । ऋ. १।१००।२

' प्रत्येक युद्धमें वृत्रका वध करनेवाला इन्द्र बलवान् होता है । '

भरे भरे नो यशसावविष्टाम् । ऋ. ५।४३।२

' प्रत्येक युद्धमें हमें सुयश प्राप्त हो । '

भरे भरे पुरो योधा भवतम् । ऋ. ७।८२।९

प्रत्येक युद्धमें अग्रभागमें रहकर युद्ध करनेवाले हो जाओ। इस प्रकार ' भरे भरे ' का अर्थ वेदमंत्रोंमें युद्ध है । इससे सिद्ध होता है कि युद्धमें विजय पानेवाले वीरोंके घर धनसे भरपूर भर जाते हैं ।

७ आक्रन्दे

' आक्रन्द ' का मूल धात्वर्थ ' रोना, पुकारना, शोक करना ' है युद्धमें जिनके वीर मारे जाते हैं, उनके रिश्तेदार रोते हैं, वे शोक करते हैं । पराजितोंको रोना पडता है । युध्यमान राष्ट्रोंको कष्ट पहुंचते हैं, इस कारण युद्धका नाम ही ' आक्रन्द ' हो गया है । इसलिये युद्ध न हो ऐसा यत्न करना चाहिये । क्योंकि युद्धसे शोक ही करना पडता है । विजय मिलने पर भी युद्धमें उनके कई वीर मरे होते हैं । इसलिये आक्रन्दन दोनों ओर होता है । युद्धका नाम ' आक्रन्द ' रख कर वेदने यह सत्य सिद्धान्त जगत्के सामने रखा है कि युद्धके विजेता और पराभूत दोनों पक्षोंमें ' आक्रन्दन ' अर्थात् ' रोना ' होता ही हैं ।

युद्धमें वीर पुकार पुकार कर शत्रु पक्षके वीरोंको आह्वान देते है, इसलिये भी ' आक्रन्द ' नाम युद्धको मिला होगा। अब इसके प्रयोग मंत्रमें देखिये—

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या व्यैलबाः ।
युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः ।
सा नो भूमिः प्रणुदतां सपत्नानसपत्नं मा
पृथिवि कृणोतु । अथर्व १२।१।४१

(यस्यां भूम्यां) जिस मातृभूमि पर (मर्त्याः) मनुष्य उच्च स्वरसे गाते और नाचते हैं, (यस्यां दुन्दुभिः वदति) जिस मातृभूमिमें ढोल बजते हैं और (यस्यां आक्रन्दः युध्यन्ते) जिसमें बडी घोषणा करके वीर लोग युद्ध करते हैं (सा नो भूमिः) वह हमारी मातृभूमि (सपत्नान् प्रणुदतां) शत्रुओंको दूर करे (मा असपत्नं कृणोतु) और मुझे शत्रुरहित करे ।

इस तरह यह ' आक्रंद ' पद युद्धके लिये वेदमंत्रमें प्रयुक्त होता है ।

८ आहवे

' आहव ' पदका अर्थ ' आह्वान करना, बुलाना, युद्ध के लिये बुलाना, युद्ध करना ' ऐसा है । युद्धके अर्थमें यह पद वेदमें आता है । युद्ध करनेके लिये किसीने बुलाया तो अपनी तैयारी चाहिये । इसका प्रयोग देखिये—

चतुर्भिः साकं नवतिं च नामभिः
चक्रं न वृत्तं व्यतीँरवीविपत् ।
बृहच्छरीरो विमिमान ऋकभिः
युवाऽकुमारः प्रत्येत्याहवम् । ऋ. १।१५५।६

' चार और नब्बे नामोंके साथ चक्र जैसा अपने घेरेमें घूमता है वह सूर्य (बृहच्छरीरः) बडे शरीरवाला (ऋकभिः विमिमानः) स्तुतियोंसे संमानित होकर (युवा अकुमारः) तरुण और कुमारसे बडा (आहवं प्रति एति) जहां आह्वान होता है वहां जाता है, युद्ध होता है वहां पंहुंचता है ।

' आहवं प्रति एति ' जहांसे आह्वान होता है वहां पहुंचता है, तथा और देखिये—

अनानुदो वृषभो जग्मिराहवं
निष्टप्ता शत्रुं पृतनासु सासहिः ।
असि सत्य ऋणया ब्रह्मणस्पत
उग्रस्य चिद् दमिता वीळुहर्षिणः ॥ ऋ. २।२३।११

'(अनानुदः वृषभः) अनुपम बलवान् वीर (आहवं जग्मिः) युद्धमें जानेवाला (शत्रुं निष्टप्ता) शत्रुका विनाशक (पृतनासु सासहिः) युद्धोंमें शत्रुका पराभव करनेवाला, हे ब्रह्मणस्पते ! तू (सत्यः ऋणया असि) सच्चा ऋण चुकानेवाला है। (वीळुहर्षिणः उग्रस्य दमिता) बलके कारण हर्षित होनेवाले विशेष शूर शत्रुका दमन करनेवाला तू है।'

इसमें 'आहवं जग्मिः' युद्धका आह्वान होनेपर युद्धमें जानेवाला यह ब्रह्मणस्पति है। तथा—

इन्द्रं न कश्चन् सहते आहवेषु ॥ ऋ. ६।४७।१;
अथर्व. १८।१।४८

'इन्द्रकी शक्तिको कोई शत्रु युद्धमें सहन नहीं कर सकता।' इतना सामर्थ्य युद्धोंमें इन्द्र दिखाता है।

इस प्रकार 'आहव' पद वेदमें युद्धके अर्थमें आता है।

९ नदनुः

'नदनु' का अर्थ वेदमें युद्ध है। निघण्टुमें युद्ध नामोंमें इस पदका पाठ किया है। कोशोंमें इसके ये अर्थ दिये हैं। 'सिंह गर्जना, स्तुतिके शब्द, मेघ, युद्ध, संग्राम' वेदमें यह पद युद्ध अर्थमें ही आता है—

यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित् पितेव
हूयसे। ऋ. ८।२१।१४; अथर्व. २०।११४।२

'(यदा) जब तू (नदनुं कृणोषि) युद्ध करता है तब तू (सं ऊहसि) उत्तम विचार करके जो करना होगा वह करता है इस लिये (पिता इव हूयसे) रक्षक पिताके समान तू प्रशंसित होता है।' तथा और एक मंत्र देखिये-

स युध्मः सत्वा खजकृत् समद्वा
तुविम्रक्षो नदनुमान् ऋजीषी।
बृहद्रेणुः च्यवनो मानुषीणां
एकः कृष्टीनां अभवत् सहावा ॥ ऋ. ६।१८।२

'वह इन्द्र (युध्मः) युद्ध करनेवाला, (सत्वा) बलवान् (खजकृत्) संग्राम करनेवाला, (समद्वा) संग्राममें यशस्वी, (तुविम्रक्षः) शुद्धता करनेवाला, (नदनु-मान्) युद्धकी घोषणा करनेवाला (ऋजिषी) सोमरस पीनेवाला, (बृहद् रेणुः) युद्धोंमें बडी धूली उडानेवाला, (मानुषीणां च्यवनः) मानवी सेनाको स्थानभ्रष्ट करनेवाला (कृष्टीनां) मानवोंका (एकः सहावान् अभवत्) एक बलवान सहायक होता है।'

'नदनु' शब्दका प्रयोग वेदमें अधिक नहीं है।

१० संगम

'संगम' शब्दका अर्थ 'मिलना' है। युद्धमें दो शत्रुओंका युद्ध करनेके लिये एक स्थान पर मिलना इस अर्थमें यह पद वेदमें 'युद्धके अर्थमें' प्रयुक्त होता है। निघण्टुमें यह पद युद्ध अर्थमें रखा है। देखिये—

तस्मा रथं मघवन् प्राव सातये
जैत्रं यं ते अनुमदाम संगमे ॥ ऋ. १।१०२।३

'(संगमे) युद्धमें तुम्हारे (यं जैत्रं तं रथं) जिस विजयी रथको देखकर (अनुमदाम) हम आनंदित होते हैं उस रथको लेकर तुम हमारे समीप आ जाओ।' तथा—

यो नो दास आर्यो वा पुरुष्टुता
ऽदेव इन्द्र युधये चिकेतति।
अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रवः
त्वया वयं तान् वनुयाम संगमे ॥ ऋ. १०।३८।३

(यः दास आर्यः अदेवः) जो दास आर्य अथवा देवके सिवाय दूसरा शत्रु हमसे (युधये चिकेतति) युद्ध करनेकी इच्छा करता है, हे (पुरु-स्तुत इन्द्र) बहु प्रशंसित इन्द्र ! (ते शत्रवः) वे शत्रु (अस्माभिः सुसहाः सन्तु) हमारे लिये सहन करने योग्य हों, अर्थात् हम उनका सहज पराभव कर सकें (त्वया वयं तान् संगमे वनुयाम) तेरे साथ रहकर हम उनको युद्धमें विनष्ट कर सकें।' तथा—

अवो विविदे संगमेषु ॥ ऋ. १०।१३१।२,
अथर्व. २०।१२५।२

'(संगमेषु) युद्धोंमें विजय और यश प्राप्त होता है।' युद्धके अर्थमें 'संगम' पदके प्रयोग वेद मंत्रोंमें ये हैं।

११ संगे

'संग' पदका अर्थ 'मिलना, मित्रतासे एकत्रित होना' है। यह पद पुल्लिंगमें 'संगः' ऐसा होता है, और नपुंसकलिंगमें 'संग' ऐसा होता है। नपुंसकलिंगके 'संग' पदका अर्थ 'मारना, शत्रुका वध करना' है। इस कारण यह पद निघण्टुमें युद्धके नामोंमें आया है। इस पदका प्रयोग नीचे दिये मंत्रोंमें आया है—

आ न इन्द्रो दूरादा न आसाद्
अभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः ।
ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः
संगे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून् ॥

ऋ. ४।२०।१;वा.य. २०।४८

'(अभिष्टिकृत् उग्रः) सहायता करनेवाला उग्र वीर इन्द्र (अवसे) हमारी सुरक्षाके लिये (दूरात् नः आसात् नः आ यासत्) दूरसे और समीपसे भी हमारे पास आ जाय । (नृपतिः वज्रबाहुः) मनुष्योंका पालक वज्रके समान कठोर बाहुवाला और (संगे समत्सु) युद्धमें तथा संघर्षोंमें (पृतन्यून् तुर्वणिः) सैनिकोंका वध करनेवाला इन्द्र (ओजिष्ठेभिः) बलवान सैनिकोंके साथ हमारे पास आजाय ।'

प्रो ष्वस्मै पुरोरथं इन्द्राय शूषमर्चत ।
अभीके चिदु लोककृत् संगे समत्सु वृत्रहा
अस्माकं बोधि चोदिता ॥

ऋ. १०।१३३।१, अथर्व २०।९५।२

(अस्मै इन्द्राय) इस इन्द्रके लिये (पुरोरथं शूषं प्रसु अर्चत) उसके रथको आगे बढानेवाला स्तोत्र उत्तम रीतिसे गावो । (अभीके लोककृत्) पासके युद्धमें स्थान बनानेवाला (संगे समत्सु वृत्रहा) युद्धमें तथा संघर्षोंमें वृत्रनाशक इन्द्र (अस्माकं चोदिता बोधि) हमारा प्रेरक होवे ।'

इस प्रकार 'संगे' पद युद्धवाचक वेदमें है ।

१२ संगथे

'संगथे' पद युद्धवाचक निघण्टुमें आया है । इसके मंत्र ये हैं—

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।
भवा वाजस्य संगथे ॥

ऋ. १।९१।१६ वा. य. १२।११२

'(आप्यायस्व) तू बलवान बन । हे सोम ! (ते विश्वतः वृष्ण्यं समेतु) तुझे चारों ओरसे सामर्थ्य प्राप्त हो । (वाजस्य संगथे भव) तू सामर्थ्यके युद्धमें खडा रह ।'

भगं धियं वाजयन्तः पुरंधिं
नरा शंसो ग्नास्पतिर्नो अव्याः ।
आये वामस्य संगथे रयीणां
प्रिया देवस्य सवितुः स्याम ॥ ऋ. २।३८।१०

(भगं धियं पुरंधिं वाजयन्तः) भाग्ययुक्त बुद्धिमान पुररक्षकको हम अधिक बलवान करते हैं, (नराशंसः ग्नास्पतिः नो अव्याः) मनुष्यों द्वारा प्रशंसित, दैवी शक्तियोंका स्वामी हमारा रक्षण करे ।

(वामस्य आये संगथे) धनके लिये आवश्यक हुए युद्धमें (सवितुः देवस्य प्रियाः स्याम) सविता देवके प्रिय होकर हम रहें ।'

'संगथे' पदके युद्ध अर्थमें वेदमें ये प्रयोग हैं। 'संगथे' पदका अर्थ 'समागम, संगति, मेलमिलाप' ऐसा है । मेलमिलाप होनेके पश्चात् इस मेलमिलापमें विरोध पैदा होता है, जिससे मतभेद उत्पन्न होनेसे उसीमेंसे युद्ध शुरू होता है । इस कारण 'संगथे' पद युद्धवाचक माना गया है ।

१३ समिथे

'समिथ' पद 'युद्ध, संमेलन, अग्नि, आहुति' इन अर्थोंमें है । निघण्टुमें यह युद्ध नामोंमें रखा है । इसका प्रयोग वेदमन्त्रोंमें दीखता है, इसके उदाहरण ये हैं—

स इन् महानि समिथानि कृणोति
युध्म ओजसा जनेभ्यः ॥ ऋ. १।५५।५

(स इत् युध्मः) वह इन्द्र युद्ध करनेवाला है, वह (जनेभ्यः) लोगोंके हितके लिये (ओजसा मज्मना) अपने बडे सामर्थ्यसे (महानि समिथानि) बडे युद्ध (कृणोति) करता है'।

स हि वाजी समिथे ब्रह्मणस्पति ॥ ऋ. २।२४।११

वह ब्रह्मणस्पति (समिथे वाजी) युद्ध करनेमें बलवान है ।

नरश्चिद्वां समिथे शूरसातौ
ववन्दिरे पृथिवी वेविदानाः ॥ ऋ. ३।५४।४

'हे (पृथिवि) हे मातृभूमे । (शूरसातौ समिथे) शूर लोगोंके द्वारा चलाये युद्धमें (वेविदानाः नरः वां ववन्दिरे) ज्ञानी नेता लोग तुम्हें वंदन करते हैं ।'

जेषाम समिथे त्वोतयः ॥ ऋ. ९।७६।५

(समिथे) युद्धमें (त्वा-ऊतयः) तेरे संरक्षणसे सुरक्षित हुए हम (जेषाम) जीतें ।

सनेम वाजं समिथेषु अर्यः ॥ ऋ. ११७३।५

(समीथेषु) युद्धोंमें (अर्यः वाजं सनेम) शत्रुसे धन प्राप्त करें। यहां स्पष्ट कहा है कि 'अर्यः वाजं सनेम' शत्रुसे धन प्राप्त करें। अर्थात् युद्धमें विजय मिलने पर जो शत्रुके धनकी लूट की जाती है, वही यह धन है।

शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान्
वस्वो राशिमभिनेतासि भूरिम् ॥ ऋ. ४।२०।८

हे इन्द्र ! तू (शिक्षानरः) लोगोंको मार्ग बतानेवाला है, (समिथेषु प्रहावान) युद्धोंमें शत्रुपर प्रहार करनेवाला है। (भूरिवस्वः राशिं) बडी धनकी राशीको (अभिनेता असि) देनेवाला है।

स हन्ति वृत्रा समिथेषु । ऋ. ४।४१।२

वह युद्धोंमें वृत्रोंको मारता है। तथा और देखिये—

वृत्राण्यन्यः समिथेषु जिघ्नते ॥ ऋ. ७।८३।९

(अन्यः) दोनोंमेंसे एक वीर (समिथेषु) युद्धोंमें वृत्रोंको मारता है।

दिद्युं यदस्य समिथेषु मंहयन् । ऋ. १०।४८।२

(अस्य दिद्युं) इसका तेजस्वी वज्र (समिथेषु मंहयन्) युद्धोंमें बडा महत्त्व प्राप्त करता है।

इस प्रकार 'समिथ' पद वेदोंमें युद्ध वाचक है।

१४ समर्ये

'समर' पद युद्ध वाचक सुप्रसिद्ध है। निघण्टुमें युद्ध वाचक पदोंमें इसका पाठ है। इसके ये मंत्र है—

वयमग्ने वनुयाम त्वोता
वसूयवो हविषा बुध्यमानाः।
वयं समर्ये विदथेषु अह्नां
वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान् ॥ ऋ. ५।३।६

हे अग्ने! (वसूयवः वयं) धनकी इच्छा करनेवाले हम (हविषा बुध्यमानाः) हविसे तुझे प्रदीप्त करके (त्वा-ऊताः वनुयाम) तेरेसे संरक्षित होकर हम धन प्राप्त करें। (समर्ये) युद्धमें विजयसे तथा (विदथेषु राया) यज्ञोंमें धनसे युक्त हों। और हे (सहसः पुत्र) बलके पुत्र अग्ने! (मर्तान्) नौकर चाकर भी प्राप्त करें।

त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः
शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये ॥ ऋ. ७।१९।२;
अथर्व. २०।३७।२

(त्वं तन्वा शुश्रूषमाणः) तूने अपने शरीरसे शुश्रूषा करके (समर्ये कुत्सं आवः) युद्धमें कुत्सकी सुरक्षा की'।

इन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ ॥ ऋ. ७।२३।१,
अथर्व २०।१२।१

हे वसिष्ठ ! युद्धमें इन्द्रके महत्वका वर्णन कर।

इस प्रकार 'समर्थ' पद वेदमंत्रोंमें युद्धवाचक आया है।

१५ सङ्काः

'सङ्काः' पद निघण्टुमें युद्धवाचक करके दिया है। इसका प्रयोग एक ही वार ऋग्वेदमें दीखता है। वह मंत्र यह है—

बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रः
चिश्चा कृणोति समनावगत्य ।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः
पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥ ऋ. ६।७५।५

(बह्वीनां पिता) वह तर्कस बहुत बाणोंका पिता है, अर्थात् इस तर्कसमें बहुत बाण रहते हैं, इसलिये (अस्य बहुपुत्रः) इसके बहुत पुत्र हैं। बाण ये तर्कसके पुत्र हैं। यह बाण (समनावगत्य) युद्धमें जाकर (चिश्चा करोति) चिश्चा ऐसा शब्द करता है, (पृष्ठे निबद्धः) पीठ पर बंधा हुआ यह (इषुधिः) तर्कस (प्रसूतः) बाणको बाहर फेंक कर, बाणोंको प्रसूत करके (सङ्काः सर्वाः पृतनाः च जयाति) सब प्रकारके युद्ध और सब सेनाओंको जीतता है।

इस मंत्रमें 'सङ्का' पद युद्धवाचक आया है। सब वेदोंमें इस पदका प्रयोग एक ही बार हुआ है। इषुधि, बाण आदिके साथ 'सङ्का' पद युद्धवाचक है इसमें संदेह नहीं है।

१६ समनम्

'समनं' पद निघण्टुमें युद्धवाचक करके दिया है। 'स-मनं' पदका अर्थ 'मनका विचार एक करके कार्य करना'। सबका एक विचार, अधिकसे अधिक एकताका विचार, युद्धके कार्यके लिये ही करना पडता है, इसलिये इस पदका अर्थ युद्ध हुआ है। इसके उदाहरण ये हैं—

वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं
प्रियं सखायं परिषस्वजाना ।
योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्
ज्या इयं समने पारयन्ती ॥ ऋ. ६।७५।३

'(इयं ज्या) यह धनुष्यकी डोरी (समने) युद्धमें (धन्वन् अधि) धनुष्य पर (वितता) फैली हुई (पारयन्ती) पार पंहुचाती है (प्रियं वक्ष्यन्ती इव) प्रिय भाषण करनेके लिये (कर्णं आगनीगन्ति) कानके पास जाती है (योषा सखायं इव) स्त्री जैसी अपने पतिके पास (परिषस्वजाना शिङ्क्ते) आलिंगन देकर बोलती है।'

इसमें 'समने' पदका अर्थ युद्ध है। युद्धमें धनुष्यकी डोरी कानके पास आती है, और प्रिय स्त्री आलिंगन देकर कानमें कुछ गुप्त बात कहती है ऐसा दीखता है।

१७ समत्सु

'समत्सु' यह पद निघण्टुमें युद्धके नामोंमें आया है। कोशोंमें भी 'समत्सु' ऐसा पद नहीं है। पर वेदमें तथा निघण्टुमें वह है इसके उदाहरण वेदमें हैं, देखिये—

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः।
तस्मा इन्द्राय गायत॥

ऋ. १।५।४; अथर्व २०।६९।२

'(यस्य संस्थे हरी) जिसके रथमें जोते दो घोडे देखकर (समत्सु शत्रवः न वृण्वते) युद्धोंमें शत्रु नहीं ठहर सकते, (तस्मै इन्द्राय गायत) उस इन्द्रके स्तोत्र गावो'। तथा—

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रं
अस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रं ऊतये समत्सु
घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥

ऋ. ३।३०।२२; अथर्व २०।११।११

(शुनं मघवानं इन्द्रं हुवेम) उत्साही धनवान इन्द्रकी हम प्रशंसा गाते हैं, (अस्मिन् वाजसातौ भरे नृतमं इन्द्रं) इस अन्नका लाभ कर देनेवाले संग्राममें जो अत्यंत श्रेष्ठ नेता है उस इन्द्रकी हम स्तुति करते हैं। (शृण्वन्तं उग्रं) हमारी प्रार्थना सुननेवाला वह उग्रवीर (समत्सु वृत्राणि घ्नन्तं) युद्धोंमें शत्रुओंको मारनेवाला और (धनानां संजितं) धनोंको जीतनेवाला है'।

इस रीतिसे 'समत्सु' पद युद्धवाचक वेदमें है।

१८ पृतनाः

'पृतनाः' पदका अर्थ 'सैन्य, सेनापथक, युद्ध, संग्राम' आदि है।

सोमापूषणौ अवतं धियं मे
युवाभ्यां विश्वा पृतना जयेम॥ ऋ. २।४०।५

हे सोम और पूषा! (मे धियं अवतं) मेरे बुद्धिपूर्वक किये कर्मकी सुरक्षा करो। (युवाभ्यां) तुम दोनोंसे सुरक्षित हुए हम (विश्वाः पृतनाः जयेम) सब संग्रामोंमें शत्रुओंको जीतें।

अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य॥

ऋ. ३।२४।१

हे अग्ने! (अभिमातीः पृतनाः) शत्रुकी सेनाको युद्धक्षेत्रमेंसे (अपास्य सहस्व) दूर हटा कर उसका पराभव कर।

त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम। अथर्व ५।३।१

तेरे अध्यक्ष होनेपर सब शत्रुसेनाके ऊपर हम विजय प्राप्त करें।

इस तरह 'पृतनाः' पद सैनिकों तथा युद्धोंके लिये वेदमें आता है।

१९ पृत्सु

'पृत' का अर्थ 'सेना, सैनिक गण, सैन्य' है। 'पृत्सु' का अर्थ 'सेनामें, सैनिकोंमें, सेना विभागोंमें' ऐसा है। सैनिकोंमें रहना युद्धकी तैयारीसे रहना है, इस कारण 'पृत्सु' का अर्थ वेदमें तथा निघण्टुमें 'युद्ध' हुआ है।

यमग्ने पृत्सु मर्त्यं अवा वाजेषु यं जुनाः।
स यन्ता शश्वतीः इषः॥ ऋ. १।२७।७; वा. य. ६।२९

'हे अग्ने! (यं मर्त्यं) जिस मानवको तू (पृत्सु अवाः) युद्धोंमें सुरक्षित रखता है, तथा (वाजेषु यं जुनाः) युद्धोंमें जिसको प्रेरित करता है, (सः शश्वती इषः यन्ता) वह शाश्वत अन्नोंका नियमन करता है।' तथा—

आनो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम्।
विश्वासु पृत्सु दुष्टरम्॥ ऋ. १।७९।८

हे अग्ने! (सत्रासाहं) दारिद्र्यका नाश करनेवाला (वरेण्यं) श्रेष्ठ (रयिं नः आभर) धन हमें दे दो। जो धन (विश्वासु पृत्सु दुष्टरं) सब प्रकारकी लडाइयोंमें शत्रुके द्वारा छीननेके लिये अशक्य है।

इस प्रकार 'पृत्सु' पदका अर्थ वेदमंत्रोंमें 'युद्ध' है।

२० स्पृधः

'स्पृध' धातुका अर्थ स्पर्धा करना है। स्पर्धा करनेवाला

शत्रु होता है और शत्रुसे युद्ध होता है, इस कारण 'स्पृधः' का अर्थ 'युद्ध' है इसके वेदमें ये प्रयोग हैं—

जयेम सं युधि स्पृधः ॥ ऋ. ११८।३; अथर्व २०।७०।१९

'स्पर्धा करनेवाले शत्रुओंके साथ होनेवाले युद्धमें हम विजय प्राप्त करें'।

अभि स्पृधो यासिषद् वज्रबाहुः। ऋ. १।१७४।५

'(वज्रबाहुः) वज्रके समान जिसके बाहु है वह इन्द्र (स्पृधः) युद्धमें (अभि यासिषद्) आगे बढे।

विश्वा यदजय स्पृधः। अथर्व २०।२९।३

'तूने सारे युद्धोंको जीत लिया।' इस तरह 'स्पृधः' पद वेदोंमें स्पर्धा करनेवाले शत्रुओंके साथ होनेवाले युद्धका वाचक है।

२१ मृधः

'मृधः' पद शत्रुके अर्थमें वेदमें आता है। निघण्टुमें इसका पाठ युद्ध नामोंमें किया है। कोशोंमें यह पद 'शत्रु' अर्थमें है। शत्रुसे ही युद्ध होता है इसलिये यह पद युद्ध वाचक बना है, इसके उदाहरण ये हैं—

जहि शत्रूँ अप मृधो नुदस्व
अथ अभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ ऋ. ३।४७।२

(शत्रून् जहि) शत्रुओंका पराभव कर (मृधः अप नुदस्व) शत्रुओंके साथ होनेवाले युद्धोंमें उनको दूर कर। (अथ) पश्चात् (नः विश्वतः अभयं कृणुहि) हमारे लिये सब ओरसे निर्भयता कर।

'मृध्' धातुका अर्थ 'हिंसा करना, मारना' है इस कारण इसका अर्थ 'युद्ध, शत्रुनाश' आदि है।

२२ रणः

'रण' का अर्थ 'युद्ध' प्रसिद्ध है। 'रण्' धातु इस पदमें युद्ध करनेके अर्थमें है, उसके प्रयोग ये हैं—

धनंजयो रणे रणे। ऋ. १।७४।३

अयं रणाय ते सुतः। ऋ. ८।१७।१२

'प्रत्येक युद्धमें विजय प्राप्त करनेवाला यह है। यह तेरा पुत्र युद्धके लिये ही उत्पन्न हुआ है।

२३ विखादः

'विखाद' पद युद्ध नामोंमें पठित है। इसका उदाहरण यह है—

तं विखादे सस्निं अद्य श्रुतं
नरं अर्वाञ्चं इन्द्रमवसे करामहे ॥ ऋ. १०।३८।४

(तं सस्निं श्रुतं नरं इन्द्रं) उस शूर अति प्रसिद्ध नेता इन्द्रको (अद्य विखादे) आज होनेवाले युद्धमें (अवसे अर्वाञ्चं करामहे) अपने संरक्षणके लिये अपने पास बुलाते हैं।

चारों वेदोंमें इसी एक मंत्रमें यह पद एक ही बार आया है।

२४ आजौ-आजिः

'आजि' पद युद्ध वाचक प्रसिद्ध है। 'अज-गतौ' धातुसे यह पद 'आजि' बनता है। सैनिक शत्रुपर हमला करते हैं उस आक्रमणको 'आजि' कहते हैं।

इष्यामि वा वृषणो युध्यत आजौ ॥ ऋ. ८।९६।१४

'हे (वृषणः) शक्तिमान वीरो! (इष्यामि) मैं इच्छा करता हूं कि आप (आजौ युध्यत) युद्धमें संग्राम करते रहो।'

२५ पृतनाज्यम्

'पृतना-आज्यं' पद निघण्टुमें युद्धके नामोंमें पठित है। 'पृतनानां अजनात् वा पृतनाज्यं जयनात्'। (निरुक्त) सैन्योंका परस्पर संघर्ष जहां होता है, एक दूसरेसे जहां अत्यंत संघर्ष होता है उस संघर्षका नाम 'पृतनाज्य' है। 'पृतना' का अर्थ सेना और 'आज्य' का अर्थ घुसकर मारते जाना।

जघ्नथुः नरा पृतनाज्येषु ॥ ऋ. ७।९९।४

'युद्धोंमें वीर परस्परोंका नाश करते हैं।'

यदिन्द्र पृतनाज्ये देवास्त्वा दधिरे पुरः।
ऋ. ८।१२।२५

हे इन्द्र! युद्धमें सब देव तुझे आगे रखते हैं।

इस रीतिसे घोर युद्धके अर्थमें 'पृतनाज्य' पद वेदमें प्रयुक्त होता है।

२६ अभीके

'अभीके' पद 'युद्ध' अर्थमें सुप्रसिद्ध है।

आरे स्याम दुरितादभीके ॥ ऋ. ३।३९।७

(दुरितात् अभीके) पापसे होनेवाले युद्धमें हम (आरे स्याम) दूर रहें।

२७ नेमधिता

'नेमधिता, नेमधिति' इन पदोंका अर्थ 'विभाग करना, तोडना, युद्ध करना, युद्ध' आदि होता है।

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते ॥ ऋ. ७।२७।१

(नरः) नेता लोग (नेमधिता) युद्धके समय इन्द्रको बुलाते हैं।

नेमधिता न पौंस्या ॥ ऋ. १०।९३।१३

'युद्ध करनेवाले वीर जैसे बलवान् होते हैं।' इस प्रकार नेमधिता पदके वेदमंत्रोंमें प्रयोग हैं।

२८ मीळ्हे

'मीळ्हे' पद युद्धके नामोंमें निघण्टुमें आया है। 'मीढ' का अर्थ युद्ध है, उसीका यह वैदिक रूप दीखता है।

मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः ॥ ऋ. ९।१०६।१२

(मीळ्हे) युद्धमें (सप्तिः न) घोडा जैसा (वाजयुः) बल बढाता है।

२९ समरणे

'समर' पद युद्ध वाचक है, वही 'समरणे' हो गया है इसका उदाहरण यह है—

मा नः समरणे वधीः । ऋ. १।१७०।२

मा वृताः समरणे हवन्ते । ऋ. ४।४२।५

युद्धमें हमारा वध न कर। युद्धमें शत्रुसे घेरे गये वीर सहाय्यार्थ मुझे ही बुलाते हैं।

३० समोहे

'समोहे' पदका पाठ निघण्टुमें युद्धनामोंमें किया है। 'समूह' का अर्थ 'संगठन, एकत्रीकरण, समूह बनाना' है। ऐसे समूह बने, तो दो समूहोंमें मतभेद हुआ, तो युद्ध होता है। इस कारण 'समोहे' पद युद्धवाचक हुआ है।

समोहे वा य आशत नरः तोकस्य सनितौ ।
विप्रासो वा धियावयः ॥ ऋ. १।८।६;
अथर्व. २०।७१।२

(धियावयः विप्रासः) बुद्धिमान ज्ञानी (नरः) नेता वीर (तोकस्य सनितौ) पुत्रके उत्सवमें अथवा (समोहे वा ये आशत) युद्धमें जो इकठे होते हैं।

इयर्ति रेणुं मघवा समोहम् ॥ ऋ. ४।१७।१३

'इन्द्र युद्धमें, अपने सैन्यकी चढाईके कारण, धूली उडाता है।' इस तरह 'समोहे' पद युद्ध अर्थमें वेदके मंत्रोंमें प्रयुक्त हुआ दीखता है।

३१ वृत्रतूर्ये

'वृत्रतूर्ये' पद वेदमंत्रोंमें युद्धके अर्थमें आता है। 'तूर' धातुका अर्थ 'मारना, काटना' आदि है। 'वृत्र-तूर्य' का अर्थ 'वृत्र' को मारना है, वृत्रके साथ युद्ध करना है देखिये—

भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये । ऋ. २।२६।२

'वृत्रके साथ जो लडाई हो उसमें अपने मनमें शुभ विचार युक्त रखो।

३२ पृक्षे

'पृक्ष' पद अन्नवाचक है। अन्नके लिये जो युद्ध होता है वह 'पृक्ष' कहलाता है।

पृक्षे ता विश्वा भुवना ववक्षिरे । ऋ. २।३४।४

'युद्धके समय उन सब भुवनोंको तुम आश्रय देते हो।'

३३ आणौ

'आणि' का अर्थ तलवार है। युद्धमें तलवारका उपयोग होता है इसलिये 'आणौ' का अर्थ युद्ध हुआ है।

आणौ कुत्साय द्युमते सचाहन् । ऋ. १।६३।३

'युद्धमें तेजस्वी कुत्सका हित करनेके लिये शत्रुको मारा।'

३४ शूरसातौ

'शूर-सातौ' शूर पुरुषोंका जहां समर्पण होता है, शूरोंके जीवन जहां समर्पित होते हैं, वह युद्ध ही होता है।

त्वां हि इन्द्र अवसे विवाचो ।
हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ ॥ ऋ. ६।३३।२

हे इन्द्र! (त्वां हि) तुझे ही (विवाचः चर्षणयः) विरुद्ध वचन बोलनेवाले लोग (शूरसातौ अवसे हवन्ते) युद्धमें संरक्षणके लिये बुलाते हैं।

३५ वाजसातौ

'वाज-सातौ' का अर्थ 'युद्ध' है। 'वाज' का अर्थ 'अन्न, जल, धन, बल, वाणी, शक्ति, यज्ञ, युद्ध, संघर्ष आदि है।

वृधे च नो भवतं वाजसातौ । ऋ. १।३४।१२

(वाजसातौ) युद्धमें आप हमारी शक्ति बढानेमें सहायता कीजिये।

वाजेभिः नो वाजसातौ अविड्ढि । ऋ. १।११०।९

(वाजसातौ) युद्धमें (वाजेभिः) अपने बलोंके साथ (नः अविड्ढि) हमारी सहायता कर।

भुवः सखाऽवृको वाजसातौ । ऋ. ४।१६।१८

'युद्धमें हमारा अकुटिल मित्र बनो।' इस प्रकार 'वाजसातौ' पद युद्ध अर्थमें वेदमें आता है। 'अन्नके लिये युद्ध, धनके लिये युद्ध' ये 'वाजसातौ' के अर्थ हैं।

३६ समनीके

' अनीक पद सैन्यवाचक है, (सं-अनीकं) जहां सैन्य एक दूसरेके साथ लडते भिडते हैं, उस समय युद्ध होता है, इस कारण (सं-अनीके) ' समनीके ' पद युद्ध-वाचक हुआ है।

भोजं देवासो अवता भरेषु
भोजः शत्रून् त्समनीकेषु जेता ॥ ऋ. १०।१०७।११

' (भरेषु देवासः भोजं अवत) युद्धोंमें देव उदार-वीरका संरक्षण करे। (भोजः समनीकेषु शत्रून् जेता) उदारवीर युद्धोंमें शत्रुपर विजय प्राप्त करते हैं '।

इस एक ही मंत्रमें इस पदका प्रयोग है।

३७ खले

' खल ' पद दुष्ट मनुष्यका वाचक है। दुष्टसे ही युद्ध होता है। इस लिये ' खल ' पद युद्धवाचक हुआ है।

खले न पर्षान् प्रति हन्मि भूरि ॥ ऋ. १०।४८।७

(खले पर्षान् न) पत्थरपर धान्य पटकते हैं उस तरह (खले भूरि प्रति हन्मि) युद्धमें बहुत शत्रुओंको हम मारते हैं।

' खल ' का अर्थ ' पत्थर, युद्ध, दुष्ट ' ऐसा होता है।

३८ खजे

' खज् ' धातुका अर्थ ' हलचल करना ' है। विशेष हलचल युद्धमें होती है इसलिये युद्धका अर्थ इस पदसे लिया जाता है।

स युध्मः सत्वा खजकृत् समद्वा। ऋ. ६।१८।२
शतं ऊति खजं करः। ऋ. १।१०२।६

वह युद्ध करनेमें कुशल, बलवान्, संग्राम करनेवाला, वह सैंकडों प्रकारसे हमारा संरक्षक बने।

३९ पौंस्ये

' पौंस्य ' का अर्थ ' पुरुषत्व, बल, सामर्थ्य, युद्ध ' है। पुरुषत्वसे युद्ध होता है इसलिये यह पद युद्धवाचक हुआ है।

स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या
अभिक्रत्वा नर्यः पौंस्यैः च ॥ अथर्व. २०।७६।७

(स नर्यः) वह मनुष्योंमें श्रेष्ठवीर (पौंस्यैः) युद्धके कर्मोंसे पृथिवी पर बडा हुआ है।

४० वाजे

' वाज ' पद बलवाचक है। बलसे ही युद्ध होते हैं इस कारण इसका अर्थ ' युद्ध ' हुआ है। निघण्टुमें यह पद युद्धके अर्थमें दिया है देखिये—

ऊर्ध्वः तिष्ठ न ऊतये
ऽस्मिन् वाजे शतक्रतो ॥ ऋ. १।३०।६;
अथर्व. २०।४५।३

हे (शतक्रतो) सैंकडों कर्म करनेवाले इन्द्र ! (अस्मिन् वाजे) इस युद्धमें (नः ऊतये ऊर्ध्वः तिष्ठ) हमारी रक्षाके लिये खडा रह।

अग्ने पाहि नृतम वाजे अस्मान्। ऋ. ५।४।६

हे (नृतम अग्ने) वीरोंमें श्रेष्ठ अग्ने। (वाजे अस्मान् पाहि) युद्धमें हमारा संरक्षण कर।

वाजे वाजे हवामहे सखाय इन्द्रं ऊतये।
अथर्व. १९।२४।७

प्रत्येक युद्धमें इन्द्रको हम अपनी सुरक्षाके लिये बुलाते हैं।

स वाजेषु नो अविष्यत् ॥ अथ. २०।५६।१

वह युद्धोंमें हमारा संरक्षण करता है।

इस प्रकार ' वाज ' पद वेदमंत्रोंमें युद्धवाचक है।

४१ अज्म

' अज्म ' पद निघण्टुमें युद्धवाचक है। इस में ' अज् ' धातु ' जाना, हमला करना ' अर्थमें है। ' अज्मन् ' पदका अर्थ ' गौ, हमला, युद्ध ' है। उदाहरण ये हैं—

येषां अज्मेषु पृथिवी··· भिया यामेषु रेजते।
ऋ. १।३७।८

जिनके युद्धोंमें भूमि हमला होनेके समय कांपती है।

जयन्तं अज्म। ऋ. १०।१०३।५; अथर्व. ६।९७।३

युद्धमें जीतनेवाला इन्द्र है। इन उदाहरणोंमें ' अज्म ' पद युद्ध वाचक है।

४२ सद्म

' सद्म ' पदमें ' सद् ' धातु ' बैठना, निवास करना ' अर्थमें है। अपने निवास स्थानपर शत्रु हमला करते हैं उस समय युद्ध करना पडता है, इस कारण घरवाचक ' सद्म ' पद युद्धवाचक हुआ है, देखिये—

अध स्वनान्मरुतां विश्वं आ सद्म पार्थिवम्।
अरेजन्त प्रमानुषाः ॥ ऋ. १।३८।१०

(विश्वं पार्थिवं सद्म) सब पृथिवी परके युद्धमें (मरुतां स्वनात्) मरुतोंके शब्दसे (मानुषाः प्र आ अरेजन्त) मनुष्य कांपने लगते हैं। ' सद्म ' पदका अर्थ वेदमें बहुत स्थानों पर ' घर, निवास स्थान ' ऐसा भी है और कहीं ' युद्ध ' ऐसा भी है।

४३ संयत्

' सं-यत् ' का अर्थ ' मिलना, संगठन करना, पंक्तिमें खडा रहना, युद्धकी तैयारीसे रहना ' आदि है। ' युद्धमें एक पंक्तिमें जैसे वीर खडे रहते हैं उसका भाव ' सं-यत् ' पद बताता है। इसके उदाहरण ये हैं—

अस्मे अग्ने संयद्वीरं बृहन्तं
वाजं स्वपत्यं रयिं दाः ॥ ऋ. २।४।८

हे अग्ने ! (अस्मे) हमको (संयद्-वीरं) युद्धमें वीरताका कार्य करनेवाला (बृहन्तं वाजं) बडा बलवान् (सु-अपत्यं) जिसके साथ उत्तम संतान हो ऐसा (रयिं दाः) धन हमें दे दो।

उभे वृतौ संयती संजयाति । ऋ. ५।३७।५
' दोनों समय वह युद्धमें जीतता है।

इस तरह वेदमंत्रोंमें ४३ प्रकार युद्धके वर्णन किये हैं। युद्धके इतने नाम हैं। ये नाम बताते हैं कि इतने युद्धके प्रकार हैं यह वेदके मंत्रोंमें निश्चित हुआ था।

निघण्टुमें ' संयुगे, समिति, संख्य, संवत ' ये पद युद्धके अर्थमें लिखे हैं, पर इनके मंत्र वेदमें नहीं मिलते इसलिये ये पद यहां नहीं लिये हैं। अर्थात् निघण्टुमें ४७ युद्धनाम दिये हैं। वेद मंत्रोंमें हमें ४३ पद मिले। अतः ये चार पद हैं जिनके मंत्र अन्वेषणीय हैं।

युद्धके इतने नाम वेदमें आये हैं। युद्धके इतने नाम वेदमें रहने यह भी कोई कम विचारणाका परिणाम नहीं है। इतने प्रकारके युद्ध होते हैं यह वेदमें निश्चित हुआ है। युद्धोंके इतने प्रकार निश्चित करना यह कोई कम विचारणा की बात नहीं है। मानवोंमें जितने कारणोंसे जितने प्रकारके युद्ध हो सकते हैं। वे सब प्रकार इन पदोंसे दर्शाये हैं। यह एक युद्धका संपूर्ण शास्त्र ही निश्चित सा हुआ है।

वेदमन्त्रोंमें आनेवाले युद्धके नाम